Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-II November 2014

दलितोत्थान एवं स्वतंत्र भारत

मंजू: शोध छात्रा, जे. जे. टी. यू. चुडेला (झुंझुनू, राजस्थान)

प्रस्तावना:

दलितोत्थान का शाब्दिक अर्थ है “दलितों का उत्थान करना” दलितों के प्रति किसी प्रकार का भेदभाव न करना। लेकिन पहले दलितों के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। दलितों को सपर्णों के कुओं, तालाबों से पानी लेने की मना ही थी। यदि आवश्यकता पड़ने पर सवर्णों के कुओं, तालाबों से चारी हुये पानी निकालने हुए उसे कोई देख लेता था तो वह कुआं भी भ्रष्ट मान लिया जाता था। कुऐं को अपवित्र बनाने वाले दलित को बुरी तरह से प्रताड़ित किया जाता था।

दलितों की आर्थिक स्थिति भी अत्याधिक चिंतनीय थी। इसका प्रभाव उनके खान-पान और वेशभूषा पर स्पष्ट दिखाई पड़ता था। दलितों को खाने-पीने के लिए कुछ अच्छा मिल जाए तो खुशी होती थी। इसके बारे में कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि हर दिन ज्वार, बाजरे की रोटी ही मिल जाए। कभी सब्जी के लिए तेल मिल जाए तो नमक मिलना कठिन था और यदि नमक मिल जाये तो मिर्च मिलना मुश्किल था। कभी – कभी जंगल के गूलर का फल खाकर या अन्य पेड़ों का गोदा खाकर अपना गुजर–बसर करते थे।

गाँधी और अम्बेडकर के दलितोत्थान का अध्ययन:

प्रस्तावना:

भारत का सामाजिक जीवन अत्यन्त विविधतापूर्ण है। उसकी सामाजिक संस्थाऐ सतत् रही है। भारतीय सम्भता मानवीय समाज में सबसे अधिक प्राचीन और सर्वाधिक सरस है। भारतीय समाज में जातियां अनेक समुह में विभक्त हुई। जो अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार पारस्परिक सामाजिक आचार–विचार और व्यवहार में पृथक–पृथक तानपाबाना से युक्त है। सभी जातियों के अपने-अपने व्यवहार और लक्षण जिससे उनकी अपनी विशेषता का पता चलता है। भारतीय जातीय व्यवस्था सामाजिक संगठन का अत्यन्त सामान्य रूप है। जिसके माध्यम से उनका विकास हुआ है। अन्य सामाजों की तुलना में यह भारतीय समाज की अपनी विशेषता है। जो अपेक्षाकृत नीतीयों और बंधनों पर बहुत कम निर्भर करता है। सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए तथा एक–दूसरे पर दबाव और कही उसकी रक्षा के नाम पर कही विकास के नाम कुचला जा रहा है।

www.ghrws.in

ISSN 976-9714

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-II November 2014

शोध साहित्य की समीक्षा:

डॉ. अजमेर सिंह काजल:— दलित चिन्तन के आयाम (2012)

दलित चिन्तन के आयाम में चिन्तन के उन रूपों को अभिव्यक्ति मिली है जो आधुनिक समाज निर्माण के लिए अनिवार्य है।

श्री भगवान सिंह:

गांधी और दलित भारत जागरण (2008) अस्पृश्ता विरोधी अभियान को राष्ट्रव्यापी एवं सशक्त बनाने के लिए गांधीजी ने लेखन सम्मेलन सभा आदि सभी प्रचार माध्यमों का समान रूप से इस्तेमाल किया। अस्पृश्यता के समर्थन से आमने–सामने होकर संवाद करने से उन्होनें कभी परहेज नहीं किया।

मेण्डलसोन : अछूतों के संबंध में गरीब व आधुनिक भारतीय राज्य (1998)

कहा जाता है कि छुआछूत वर्ग का उदय उस कार्य से हुआ है जो वे करते थे। हिन्दु समाज में छुआछूत वर्ग व दैनिक कार्य करता है जो प्रदूषित है जैसे मानवीय अपविष्ट पदार्थो को हटाना, साफ करना, मरे हुए जानवरों की बब्राल निकालना मृतकों का दाह संस्कार करना, चमड़ा गुंथना और कपड़े धोना आदि।

रामविलास भारती - बीसवीं सदी में दलित समाज (2011)

महाराष्ट्र में सामाजिक उत्सवों में दलितों को सम्मिलित नहीं होने दिया जाता था। दलितों को सवर्गों के कुओं, तालाबों से पानी लेने की मना ही थी। दलितों के शव को सवर्ण जलाने तक नहीं देते थे और शिक्षा के क्षेत्र में दलितों की स्थिति बड़ी दयनीय थी। इन्हें विधालय में प्रवेश मिलना कठिन था और यदि प्रवेश मिल भी जाता था तो इसके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। दलितों की आर्थिक स्थिति भी अत्यधिक चिन्तनीय थी। दलितों को अपना अच्छा नाम रखने पर प्रतिबंध था।

शोध के उद्देश्य:

1. भारतीय राजनीतिक में प्राचीन काल से जो सामाजिक विभिन्नता पाई जाती थी। उनको समाप्त करना है, अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना आवश्यक है।
2. वर्तमान युग एक शिक्षित युग है शिक्षा का प्रभाव रखते हुए दलितों का उत्थान तथा छुआछूत और जातिगत रखते हुए दलितों का उत्थान तथा छुआछूत और जातिगत भेदभाव को समाप्त करने में आपसी सहयोग व सक्रिय सहायता का अध्ययन करना है।

www.gjmvs.in

3. सामाजिक क्षेत्र में दलितों के उत्थान के लिए कई कार्यक्रम चलाये गये है। जिनमें अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा सार्वजनिक स्थानों पर अधूतों का प्रवेश, साईमन कमीशन के सहयोग से मन्दिरों में अछूतों का प्रवेश, शिक्षा छात्रावासों और पुस्तकालयों का विशेष महत्व को बढ़ावा देना शामिल है।
4. अम्बडेकर के सवर्ण हिन्दुओं और अस्पृश्यों में सामाजिक मेल—मिलाप को प्रोत्साहित करना। हिन्दुओं को दलित वर्ग की मुक्ति के लिए यह आवश्यक है।

शोध की अध्ययन विधि:

प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक तथा विवरणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा, इसके साथ–साथ शोध अध्ययन विधि द्वितीयक स्त्रोत पर आधारित प्राथमिक स्त्रोत आशिक रूप से समाहित किये गये है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि गांधी व अम्बेडकर दोनों ने दलितों उत्थान के लिए अनेक कार्य किये। दोनों ने दलितों को जागृत करने की कोशिश की तथा अम्बेडकर का दलितों उत्थान के प्रति ज्यादा योगदान है।

डॉ. राधाकृष्ण के शब्दों में "गांधीजी का सदैव इस रूप में स्मरण किया जायेगा कि युद्ध में संतप्त विश्व को शांति प्रदान करने वाली एक नैतिक तथा आध्यात्मिक क्रान्ति का समापन करने वाले महापुरूष है। आधुनिक भारत में राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, अम्बेडकर आदि ऐसे अनेकानेक विचारक हुए है।"

संदर्भ:

1. डॉ. अजमेर सिंह काजल (2012) दलित चिन्तन के आयाम, श्री. नटराज प्रकाशन दिल्ली 110053 पेज (7-20)
2. आर. के. प्रभु राव / यु. आर. प्रभु राव (1994) महात्मा गांधी के विचार प्रकाशक नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, पेज (5-99)
3. कमलाकान्त सिंह (2007) बाबा साहेल डॉ. भीमराव अम्बेडकर दर्शन और संघर्ष प्रकाशक राजा पॉकेट बुनस 330/1 मैन रोड, बुराडी, दिल्ली – 110084

www.ghrws.in

4. डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन (2012) दलित साहित्य और काव्य चिन्तन, क्रांति पब्लिकेशन्स, दिल्ली – 110053 पेज (65-77)
5. डॉ. जी. पी. नेमा (2004) गांधीजी का दर्शन, प्रकाशन रिसर्च प ब्लिकेशन्स, जयपुर।

www.ghrws.in